INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

D.P. Bhosale College, Koregaon

Tal. Koregaon, Dist. Satara (MS), INDIA
(Affiliated to Shivaji University, Kolhapur)
NAAC Re-accredited 'A' Grade (CGPA 3.12)
ISO 9001:2015 Certified

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

March -2019 Special Issue – 171 (D)

रयत शिक्षण संस्थेचे,

डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव

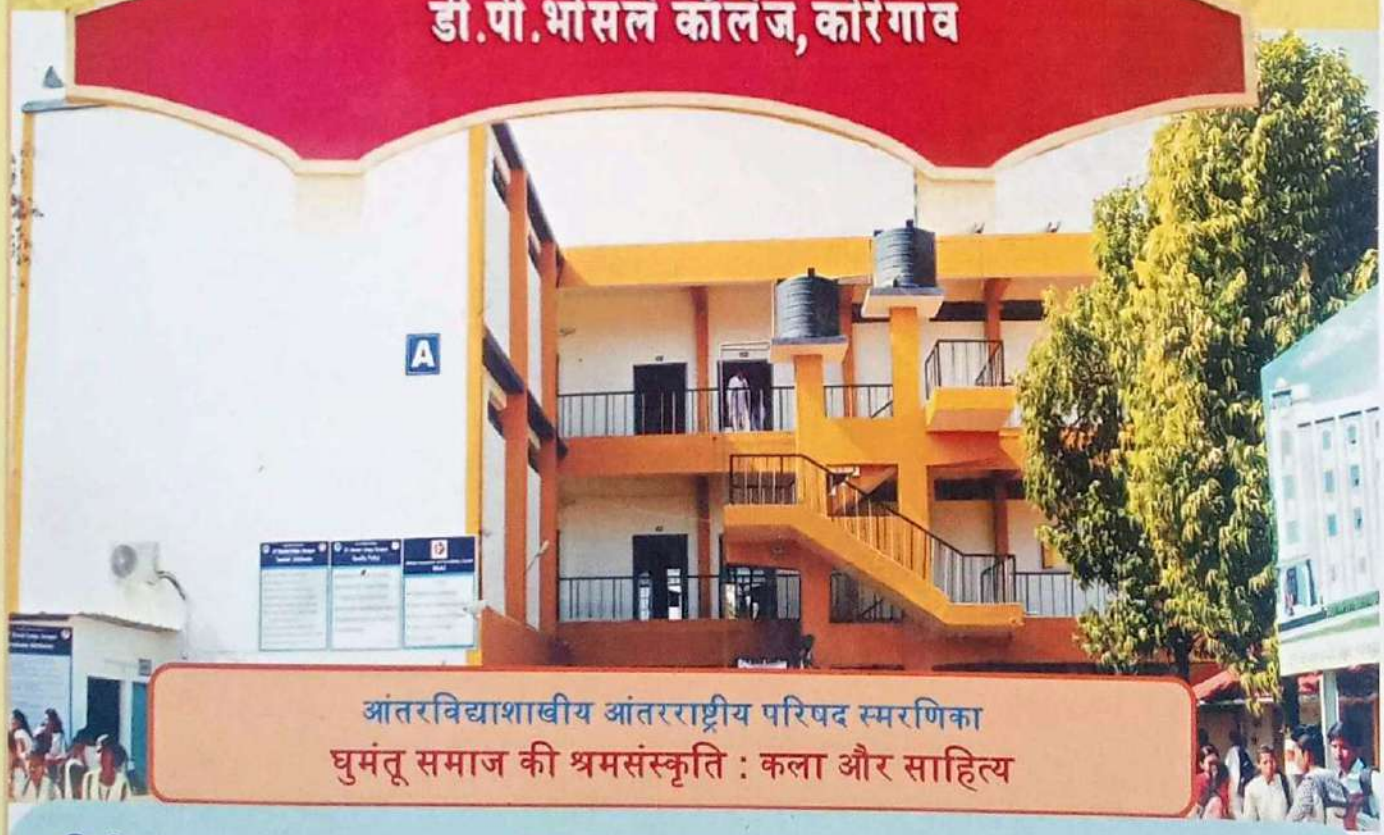

आंतरविद्याशाखीय आंतरराष्ट्रीय परिषद स्मरणिका

घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य

अतिथी संपादक
डॉ. विजयसिंह सावंत
प्राचार्य
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता.कोरेगाव, जि. सातारा

कार्यकारी संपादक
डॉ. गजानन भोसले
प्रमुख, हिंदी विभाग
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

सहयोगी संपादक
श्रीमती आर. के. मुल्ला
सहाय्यक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज धनगर (येवला)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

April -2019 Special Issue – 171 (D)

अतिथी संपादक
डॉ. विजयसिंह सावंत
प्राचार्य,
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता.कोरेगाव, जि. सातारा

कार्यकारी संपादक
डॉ. गजानन भोसले
प्रमुख, हिंदी विभाग,
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

सहयोगी संपादक
श्रीमती आर. के. मुल्ला
सहाय्यक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग,
डी.पी.भोसले कॉलेज, कोरेगाव
ता. कोरेगाव, जि. सातारा

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज धनगर **(येवला)**

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 800/-

Published by –
© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com **Website :** www.researchjourney.net **Mobile :** 9665398258

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक / लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	घुमंतू घिसाडी समाज का स्वरूप एवं वास्तव	डॉ.भानुदास आगेडकर	06
2	बंजारा समाज की संस्कृति एवं व्यवसाय का परिचय	डॉ. मेदिनी अंजनीकर	12
3	घुमंतू समाज की बोली भाषा	डॉ. बी.एस. बलवंत	15
4	वंचित आबेडकरवादी साहित्य अब वैश्विक परिदृश्य में	डॉ.गोरख बनसोडे	18
5	'छोरा कोल्हाटी का' में स्त्री शोषण कि भयानकता	महेश भोपळे	21
6	घुमंतू समाज का परिचय तथा महाराष्ट्र के घुमंतू समाज के साहित्य का स्वरूप	डॉ.जी.एस.भोसले	24
7	पारधी समाज : जात पंचायत	प्रा.एम.व्ही.वर्णेकर	27
8	घुमंतू धनगर जनजाति के अंतरंग	डॉ. संगिता चित्रकोटी	30
9	बिना चेहरे के लोग में चित्रित घुमंतू जन-जातियो की कथा-व्यथा	डॉ. नितीन धवडे	33
10	घुमंतू जन – जातियों का चित्रण सुषमा मुनींद्र की कहानी 'देवता' के संदर्भ में	कु.अलका घोडके	36
11	आदिवासी पीड़ा की सशक्त अभिव्यक्ति : निर्मला पुतुल की कविताएँ	डॉ.कामायनी सुर्वे	39
12	वंचीतो के साहित्य में चित्रित वेदना	सचिन जाधव	44
13	वंचित एवं घुमंतू आदिवासी जनजाति का साहित्य : एक विवेचन	श्री. सूर्यकांत आमलापुरे	47
14	घुमंतू समाज के साहित्य का स्वरूप	डॉ कविता पनिया	51
15	घुमंतू बंजारा जाति का स्वरूप एवं उनकी पहचान	प्रा. नीलम भोसले	53
16	घुमंतू जनजातियाँ अपनी नयी रोशनी की तलाश में	डॉ.सिंदू हालदे	58
17	जातपंचायत में गावपंचायत – घुमक्कड समाज की त्रासदी	डॉ. एच.डी.टोंगारे, सतीशकुमार पडोळकर	60
18	रांगेय राघव के 'कब तक पुकारू' उपन्यास में करनट जाति के शोषण का चित्रण	प्रा.जे.ए. पाटील	63
19	बंजारा समाज की बोली भाषा का स्वरूप	डॉ. अनिता काकडे	68
20	घुमंतू समाज में कोल्हाटी समाज	डॉ. दिलीपकुमार कसबे	72
21	रामनाथ चव्हाण के 'बिन चेहरे के इन्सान' कहानी संग्रह में चित्रित घुमंतू समाज की समस्याएँ	डॉ. एच.व्ही. काटे	76
22	बंजारा एवं पारधी : परिवर्तन के संकेत	डॉ.भारत खिलारे	81
23	भारतीय समाज का सबसे वंचित समाज : किसान	प्रा.मारुफ मुजावर	87
24	घुमंतू चित्रकथी समाज का सांस्कृतिक जीवन	श्रीमती. आर. के मुल्ला	90
25	हिंदी कहानी साहित्य में वंचित समाज का चित्रण	प्रा.पी. आर.रगडे	94
26	बंजारा समाज की गुप्त भाषागत शब्दावली : एक अध्ययन	डॉ.सुभाष राठोड	99
27	घुमंतू समाज की बोली भाषा	डॉ.संग्राम शिंदे	103
28	वंचित अवाम की बुलंद आवाज : जयभारत –जयभीम	डॉ.सय्यद शौकतअली	107
29	घुमंतू समाज की कलाओं के प्रकार और स्वरूप	श्री.अंकुश शेलार	110
30	घुमंतू समाज का व्यवसायानुसार वर्गीकरण	डॉ.बाजीराव शेलार	114
31	घुमंतू समाज का स्वरूप और उनके व्यवसाय	डॉ. महिपती शिवदास	118

32	घुमंतू समाज का व्यवसाय के अनुसार वर्गीकरण तथा व्यवसाय का स्वरूप	सुरेखा मंगलगी	123
33	घुमंतू समाज की बोली भाषा तथा सांकेतिक भाषा	डॉ. वंदन जाधव	130
34	घुमंतू जनजातियों की श्रम संस्कृति	व्यंकट बा. धारासुरे	134
35	घुमंतू समाज का व्यवसाय अनुसार वर्गीकरण	प्रा. किसन वाघमोडे	139
36	घुमंतू 'वड्डर' समाज की श्रम संस्कृति और 'तोडती पत्थर' कविता	डॉ.प्रतिभा येरेकार	143
37	घुमंतू जनजातियों में कोरकू समाज का आर्थिक जीवन	प्रा. एस. डी. कोरेबोईनवाड	146
38	घुमंतू समाज में कोरकू जनजाति की सांस्कृतिक नृत्यकला	प्रा. सुधाकर वाघमारे	151
39	हिंदी दलित काव्य में चित्रित वंचितों की पीडा	डॉ. सविता निंबाळकर	156
40	डोंबारी समाज कि संस्कृति एवं व्यवसाय का परिचय	श्रीमती. आर. के. मुल्ला	159

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 171(D) घुमंतू समाज की श्रमसंस्कृति : कला और साहित्य
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
April-2019

घुमंतू चित्रकथी समाज का सांस्कृतिक जीवन

श्रीमती मुल्ला आर. के.
सहा. प्राध्यापक
हिंदी विभाग
डी.पी.भोसले कॉलेज कोरेगाव

पृष्ठभूमि –

हमारी भारतीय समाज व्यवस्था सदियों से वर्ग एवं वर्ण्य संघर्ष में ही जीवनव्यापन करती चली आ रही है। धर्म, अर्थ, राज एवं सांस्कृतिक सत्ता की लालसा में धनिक, सामंती एवं पूँजीपति वर्ग प्रबल एवं शोषक का रूप धारण कर समस्त अधिकारों को अपने वश में कर लिया। परिणामस्वरूप निम्न जनजातियों, गरीब, बेबस, निराश्रीत और पीड़ित वर्ग भौतिक सुख–सूविधाओं से वंचित रहा है। इनमें वह मजदूर, श्रमिक एवं उपेक्षित वर्ग था जो अपनी रोजी रोटी के लिए दर–दर की ठोकरें खाते हुए गाँव–गाँव भटकता रहा है। इनके पास न जीने का कोई अधिकार था, न ही कोई साधन। यह उपेक्षित समाज मेहनत तो करता है पर अपनी आवश्यकताओं को पूर्ति नहीं कर पाता है। इस समाज के लोग इसलिए अपनी जीविका चलाने कं लिए गाय, बैल, भैंस, गधा, कुत्ता, बंदर, भालू आदि जानवरों को अपने साथ लेकर फिरते है और इन जानवरों के द्वारा अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए लोकनाट्य प्रस्तुत कर लोगों का मनोरंजन किया करते है।

घूमंतू समाज की जनजातियॉं

घूमंतू समाज अर्थात एक ऐसा समाज जो निरंतर घूमते रहते हैं। जिनकी रंग बिरंगी जीवनपद्धति है; उनकी परंपराएं एवं विशिष्ट लोकगीत है; जिन्हों ने हिंदुस्तान की विरासत को संजोने में अहम भूमिका रही है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखे तो घूमंतू समाज हाशिए पर चला गया हैं। इनका अतीत महज नाच गानें और करतब दिखाने तक ही सीमित रह गया है। यह आज अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। इसमें कहीं न कहीं प्रशासन एवं मीडिया की भी भूमिका रही है।

आज भारत में इन भटकी विमुक्त घुमंतू जन जातियों की संख्या १५ करोड़ है । इनमें से कई जातियॉं नष्ट हो गई है। और कई समाप्त होने की कगार पर है। १५ करोड़ इस बड़े जनसमूह का शासन व्यवस्था के तीनों अंगों में अल्पतम प्रतिनिधित्व है। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ प्रेस जगत में तो इन जातियों का जैसे प्रतिनिधित्व है ही नहीं। वर्तमान में इन जातियों के लोग बेघर, बेठिकाना अशिक्षित विपन्न निर्धन और अनजान होकर अभिशप्त जीवन जी रहें हैं। संविधान में इनका नाम तक दर्ज नहीं है;

संपूर्ण देश की स्थिति में देखे तो महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश के पश्चात् संभवत: मध्यप्रदेश में ही घुमंतूओं की सर्वाधिक बड़ी संख्या निवास करती है। मध्यप्रदेश के लगभग सभी जिलों में निवास और रोजगार के लिए जनजाति कल्याण विभाग की स्थापना की गयी। इन ५१ जातियों में से २१ जातियों को विमुक्त जनजाति के रूप में मान्यता दी गयी। महाराष्ट्र में पिछले कुछ वर्षों से भटके विमुक्त विकास परिषद नाम की संस्था कार्य कर रही है।

विविध जनजातियों से युक्त लोकसमूह का अर्थ है हमारा भारतीय समाज। घूमंतू जातियों में बलदिया, बाछोवालिया, भाठ,भंतु, देसर, दुर्गी, मुरागी, घिसाडी, गोंधली, ईरानी, जोगी, काशीकापड़ी, कलंदर नागफड़ा, कामद,करोला,कसाई,गड़रिये,लोहार,पिठ्टा,नायकठा, शिकलगार,सिरंगिवाला,राजगोंड, गद्दीज, रंगारी, गोलर,

गोसाई, भराड़ी हरबोला,धनगर, जोशी बालसंतोषी, जोशी बहुलीकर, जोशी चित्रकथी,जोशी हरदा, जोशी बुदबुद्की, जोशी नदिया,जोशी नामदोवाला, जोशी पिंगला, बंजारा, संपेरा,मदारी,नट,डोंबरी आदि घुमक्कड़ जन जातियों का समावेश रहा है।

चित्रकथी जनजाति का स्वरूप

जिस समय लेखन कला का अविष्कार नहीं हुआ था उस समय चित्रभाषा का जन्म हुआ। विभिन्न प्रकार के चित्र निकालकर मनुष्य ने पौराणिक ग्रंथों का प्रकाशन और पठन चित्रात्मक भाषा में हुआ। विशिष्ट जनजातियों के लोग रामायण महाभारत के प्रासंगिक चित्रों को निकाल कर कथा का कथन किया जाने लगा। भटकते हुए गॉवों, मंदिरों,और धर्मशालाओं में जाकर चित्रात्मक रूप में पहली बार ग्रंथ का पठन करनेवाले समाज का निर्माण हुआ, उसे ही चित्रकथी समाज कहा गया। यह चित्रकथी समाज रात भर बैठकर रामायण, महाभारत और पुराण की कथा के अनुसार वास्तव प्रतिबिंब चित्र निकालते और प्रभावशाली रूप में संवाद कथन करते। महाराष्ट्र में चित्रकथी की पैठण शैली और पिंगुल शैली और राजस्थानी शैली प्रसिद्ध है। चित्रकथी यह जनजाति महाराष्ट्र में कई गॉवों में दिखाई देती है। सिंधूदुर्ग जिला के लोक कलाकार एवं अध्येता गणपत सखाराम मसगे, डॉ. वसंत गंगावणे आदि ने इस लोककला को आंतरराष्ट्रीय दर्जा भी प्राप्त कर दिया है।

सोमेश्वर के 'मानसोल्लास' ग्रंथ में चित्रकथी की व्याख्या इसप्रकार दी है – '' **वर्णकै: सह यो वक्ति स चित्रकथको वर: गायका यव गायन्ति विना तालैर्अनोहरम् ।**'' अर्थात् जो चित्र के माध्यम से कथा का कथन करता है वह श्रेष्ठ चित्रकथक है।

चित्रकथा का अर्थ है – कागज पर पौराणिक कहानियों से चित्र लेकर उनके द्वारा कहानी बताना। इनकी इस कहानी से दर्शकों के सामने अनेक चित्र उभरने लगते हैं। इन चित्रों से लोगों का वे मनोरंजन करते है और पौराणिक प्रसंग का चित्रकथन करने से इन्हें चित्रकथी यह नाम मिला। चित्रकथी की उत्पत्ति मराठा से हुई है ऐसा कहा जाता है। इनके कुल के नाम ठोंबरे,इंगले,जाधव, मोरे, सालुंखे, पोवार आंबले, सूपलकर आदि होते हैं।

चित्रकथी जनजाति का सांकृतिक जीवन

इनकी कुलदेवता तुलजापुर की भवानी माता, कोल्हापुर की महालक्ष्मी, जेजुरी और पाली का खंडोबा, रत्नागिरी का जोतिबा है। इनके उपाध्य ब्राह्मण हैं।

विवाह पध्दति और उत्सवों तथा व्यवसाय का स्वरूप

चित्रकथी में कुल और देवक एक हो तो विवाह नहीं किया जाता है। बुवा की बहन या चिचोरे बहन के साथ विवाह नहीं होता है। मुमानी के बहन के साथ विवाह किया जाता है। इनमें बचपन से लेकर शादी की उम्र तक विवाह किये जाते हैं। विधवाओं का विवाह इनमें किया जाता है। लेकिन विधवा के साथ किसी कुँवारे का विवाह नहीं हो सकता। पति –पत्नी में यदि झगड़े या दरार हो तो दोनों एक दूसरे से तलाक ले सकते हैं। इनकी जाति में व्यभिचारी स्त्री को जाति से बहिष्कृत किया जाता है। दो शादियाँ इनमें हो सकती है।

इनके समारोह चित्र, गीत और विभिन्न वाद्यों से युक्त होते है। इनके द्वारा बताई गयी कथाएँ अधिकांश रूप से पौराणिक होती है। लोग आख्यायिका गाते वक्त ढोल और इकतारा के संगीत की मीठी धून सुनाते है। इसमें मणिपुर की राजकन्या चित्रलेखा का पुत्र बब्रुवाहन की शौर्यगाथा,कस्तुरी मृग के लिए मोहित होनेवाली सीता अपहरण की कथा, शिव को मोहित करनेवाली भिल्लीणी की कथा, हरिश्चंद्र की सत्वपरीक्षा

की कथा और स्वप्नसुंदर उषा और अनिरूद्ध की प्रणयगाथा है। इसमें चित्रकथाकार एक ओर अपने मुख से गाता है और दूसरी ओर अपने हाथों से चित्र और मोरपंख के द्वारा उस कथित प्रसंग को साकार करने का प्रयास किया जाता है।

लोकशैली में बंधे हुए ये लोग चित्रगीत गाते हुए गाँव–गाँव भटकते रहते हैं। दो–चार लोग मिलकर देवी–देवताओं के आर्कषक चित्र निकाल कर उनमें रंग भर देते हैं। यह इनकी चित्रकला दर्शकों को मोहित कर देती है। चित्र निकालने के लिए काली और सफेद मिट्टी, हरे रंग के लिए पेड़ के पत्ते आदि प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल करते हैं। जिला सिंधूदूर्ग के चित्रकथी गणेशोत्सव और नवरात्र के दिन धर्मग्रंथ का कथन किया जाता है।

इस कला से इनका गुजारा न होने पर वे कठपुतली, चर्मपुतली, और पांगुल का ढोंग रचाकर लोकनाटक प्रस्तुत कर अपनी जीविका चलाते हैं। एक समय था चित्रकथा इनका एकमात्र व्यवसाय था। कई लोग एक साथ गाँव–गाँव जाते और गाँव के नजदीक ही छोटी–सी कूटिया बनाकर रहते। और उनके साथ बाल–बच्चों का परिवार, घोडी, भैंस, और बकरी रखते तथा पशूपालन का व्यवसाय कर दूध–दही बेचकर अपने परिवार का पोषण करते हैं।

चित्रकथी जाति की वर्तमान स्थिति तथा व्यथा

चित्रकथी जाति का समाज यह संख्या में कम है। गरीबी,अशिक्षा, ज्ञान और अधिकार तथा नेतृत्व के अभाव के कारण आज भी इस समाज के प्रश्न सरकार तक पूर्ण रूप से नहीं पहुँच पाए। इसी पिछड़ेपन तथा सभी दृष्टियों से अभावग्रस्त जीवन के कारण उन्हें कई स्तरों पर विविध समस्याओं का सामना करना पडता है। यह इनके जीवन की विभिषिका है कि यह देश का पहला चित्रकार होने पर भी समाज में इसकी कदर का कोई मोल नहीं है। आज की दौर में इनकी यह कला एवं व्यवसाय पिछड़ गये हैं। जो समाज अपनी इस कला के द्वारा अपने देश की संस्कृति एवं समृद्धि तथा सांस्कृतिक विरासत और इतिहास को दर्शाता है। अपने विविध कला–गुणों को विभिन्न परिस्थितियों में साकार करने में लगा रहता है वह समाज हर तरह से उपेक्षित रहा है। यह सच है कि अस्थिरता के कारण जिंदगी भर यह जनजातियाँ आजीविका के लिए ही संघर्ष करती रहती है; पर इनकी भटकन को कहीं विराम नहीं मिला है; जो अवांछनीय है।

निष्कर्षत:

कहा जा सकता है कि 'चित्रकथी जनजाति का सांस्कृतिक जीवन दूसरों के लिए मनोरंजक और प्रेरणादायी है; पर इनके लिए यह सांस्कृतिक जीने की धरोहर है। इसतरह घुमंतू चित्रकथी जन–जातियों की कथा–व्यथा की यह वास्तविक तथा दयनीय स्थिति है। इस प्रपत्र के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र में अनकही बातों को उजागर करने का यह छोटा–सा प्रयास रहा है। हो सकता है इनके लिए शासन और पाठकों के मन में कुछ करने की इच्छा जागृत हो जाए। और इन्हें अभावग्रस्त जीवनव्यापन न करना पडे। आज इन जनजातियों का संविधान में नाम हो, इनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो इसलिए विभिन्न जगहों पर परिचर्चाओं का आयोजन किया जा रहा है। भले ही इनके पास शिक्षा की कोई उपाधि या पद नहीं है; लेकिन इनके द्वारा किया गया काम एवं कला की अभिव्यक्ति सृजित ज्ञान की अथाह पूँजी तथा देन है।

घुमंतू समाज चित्रकथी की कुछ चंद तस्बीरे:

संदर्भ संकेत -

1- https//bh.wikipedia.org/wiki/?kqearw lekt
2- shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/93498/8/08_chapter%202.pdf
3- उपलानी भटक्यांचे उपरे जीवन – भीमराव व्यंकप्पा चव्हाण पृष्ठ क्रं – ५२से ५५ तक
4- दै. फारवर्ड प्रेस– ६ दिसंबर २०१८
5- दै. भास्कर– ११ सितंबर २०१७
6- दै. जागरण – ३ जुलाई, २०१७
7- दै. प्रहार – २५ मार्च, २०१९
8- इंटरनेट, गूगल वेबसाइट